क़यामत की निशानियाँ

मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी

क़यामत की निशानियाँ

मुअ़ल्लिफ़

डॉ०–आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

09897626182

नाम किताब- **क़यामत की निशानियाँ**

मुअ़ल्लिफ़-डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

सने इशाअ़त-मई- **2020**

कम्पोज़िंग-जुनैद अ़ली क़ादरी सफ़वी &
जै़नुल आ़बदीन क़ादरी सफ़वी

क़ीमत- **60/-** रूपये

-: मिलने के पते :-

मदार बुक सेलर
मकनपुर (कानपुर)
09695661767

जावेद बुक सेलर
करहल (मैनपुरी)
09634447000

अनवार उर्दू बुक डिपो
बिसात खाना मैनपुरी
09319086703

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

786/92

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तई़नुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊजू बिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फुसिना वमिन सइयेआति आअ़मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादिया लहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू ०

तमाम खूबियाँ और तारीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है जिसने अपनी रह़मत व मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ व तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी ह़म्दो सना न करता हो हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है।

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला, हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और दुरूदो सलाम हो रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम पर जो ज़ाहिर

व बातिन में तय्यब व ताहिर हैं जो तमाम ऐ़बो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो आ़लम में उजाला है अल्लाह तआ़ला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर रोज़े क़यामत प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे जिन्होंने इन्सान को गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को औसाफ़ व अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बिया-किराम अ़लैहिमुस्सलाम का सरदार बनाया और अपने नूर से हुजूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है

और रहमत व सलामती हो आपके अहले बैत अत्हार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो रोज़े क़यामत मुहिब्बाने अहले बैत की निजात का ज़रिया होंगे और हर आफ़त व मसाइब के दरमियान ढ़ाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुतह्रात और आपकी आल व असहाव और तमाम औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-इ़ज़ाम पर और उन पर जो अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब व मख़सूस बन्दे हैं।

-: तम्हीद -:

अल्लाह रब्बुल इज्ज़त का शुक्र व एहसान है कि जिसकी तौफ़ीक़ से मैं इस किताब की ताअ़लीफ़ कर रहा हूँ और अल्लाह तबारक व तअ़ाला का अ़ज़ीम फ़ज़्लो करम है कि जिसने मुझे ये सआ़दत अ़ता फ़रमाई अल्लाह तबारक व तअ़ाला फ़रमाता है कि दुनियाँ मन्ज़िल नहीं है बल्कि राह गुज़र है और ऐ गुनाहों के पुतले तूने कितने गुनाह किये जिसका तुझे खुद अंदाज़ा नहीं और न ही तू उन गुनाहों को शुमार कर सकता है मगर फिर भी मैं तेरी तौबा पर तेरे गुनाहों को माफ़ कर देता हूँ और दुनियाँ में तेरे गुनाहों की पर्दा पोशी भी करता हूँ और तूने मेरी कितनी ना फ़रमानियाँ की फिर भी मैंने उन्हें दर गुज़र फ़रमाया और मैं चाहता हूँ कि ऐ मेरे बन्दे तू मेरी फ़रमां बरदारी के साथ अपनी ज़िन्दगी गुज़ार और मेरी फ़रमां बरदारी पर ही तेरा ख़ात्मा हो

अल्लाह तअ़ाला फ़रमाता है क्या तू मेरी उन नेअ़मतो का शुमार कर सकता है जो मैंने तुझे अ़ता की फिर भी तू मेरा शुक्र अदा नहीं करता और दुनियाँ में तुझे तेरे बुरे आअ़मालों ने धोके में डाल रखा है क्या मैंने तेरे लिये कायनात को मुसख़्ख़र नहीं किया (यानी तेरे ताबेअ़ और तेरे क़ाबू में नहीं दिया) और तू है कि सरकश होता चला जा रहा है और मेरी ना शुक्री व नाफ़रमानी

और बुरे आअ़मालों के ज़रिये अपनी आख़िरत क्यों ख़राब कर रहा है क्या मैंने तुझे अ़क्ल न दी क्या मैंने तुझे अच्छे व बुरे और सही व ग़लत में इम्तियाज़ करने की समझ व सलाहियत अ़ता नहीं की क्या मेरा कुरान और मेरे नबी व रसूल तेरी हिदायत के लिये काफ़ी नहीं हैं और तू दुनियाँ में रिहायश का तलबगार है हालाँकि ये राह गुज़र के लिये एक पुल के मिस्ल हैसियत रखती है और तुझे तो जन्नत का तलबगार होना चाहिये था लेकिन तू तो दुनियाँ की मुहब्बत में मुब्तिला हो गया है और तुझे तो मेरे दीदार का मुश्ताक़ व ख़्वाहिश मन्द व तलबगार होना चाहिये था मगर तू तो इस फ़ानी दुनियाँ और उसकी ज़ैबो ज़ीनत में इस क़दर खो गया कि तू मुझे और मेरी अ़ता कर्दा नेअ़मतों को भी भूल गया और ना फ़रमान व ना शुक्रा हो गया

क्या तुझे लौटकर मेरे पास नहीं आना है क्या अपने आअ़मालों का हिसाब नहीं देना है क्या तुझे दोज़ख़ से डर नहीं लगता था क्या क़ब्र की सख़्तियाँ और मेरा अ़ज़ाब तुझे ख़ौफ़ ज़दा नहीं करता क्या मैंने तेरे लिये जन्नत को आरास्ता नहीं किया फिर क्यों तू बुरे आअ़माल और गुनाहों के ज़रिये अपनी जन्नत को ठोकर मार रहा है और दोज़ख़ की आग को अपने ऊपर उढ़ेल रहा है क्या तू नहीं जानता जब तेरी मौत का वक़्त क़रीब होगा उस वक़्त तेरा हाले तसव्वुर क्या होगा

तेरे बुरे आअ़मालों के बाइस तेरी क़ब्र वहशतनाक होगी और कोई मूनिस व मददगार न होगा और सफ़र दूर का होगा और सफ़र के लिये तेरे पास न कोई सामान होगा और न ख़र्च होगा रोज़े क़यामत पुल सिरात तलवार से ज़्यादा तेज़ और बाल से ज़्यादा बारीक होगी जिसे तू कैसे पार करेगा दोज़ख़ की आग सख़्त गरम होगी और तेरा जिस्म कमज़ोर होगा और तू वहाँ से जन्नत को देखेगा जो बहुत ऊँची होगी मगर तू वहाँ तक पहुँच न सकेगा और तेरा परवर दिगार अ़ादिल है मगर तेरे पास कोई हुज्जत व दलील न होगी और मीज़ान पर तेरे नेक आअ़मालों का पलड़ा वज़नी न होगा और मैदाने महशर में सख़्त धूप व शिद्दत की गर्मी होगी और वहाँ अल्लाह की रहमत के साये के सिवा कोई साया न होगा जिसके नीचे तू खड़ा हो सके इसलिये वक़्त रहते संभल जा क्योंकि बेशक क़यामत क़रीब है इसलिये अल्लाह से तौबा कर और नेक आअ़माल की कसरत कर बेशक अल्लाह तअ़ाला बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।

फ़क़ीर

डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

09897626182

–: क़यामत क़रीब है :–

इरशादे बारी तआ़ला है :–
यक़ीनन क़यामत की घड़ी आने वाली है।
(सू०–हिज्र–15/85)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
बेशक क़यामत की घड़ी आने वाली है मैं उसे पोशीदा रखना चाहता हूँ ताकि हर जान को उस (अ़मल) का बदला दिया जाये जिसके लिये उसने कोशिश की।
(सू०–ताहा–20/15)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
आने वाली (क़यामत की घड़ी) क़रीब आ पहुँची अल्लाह के सिवा इसे कोई ज़ाहिर और क़ायम करने वाला नहीं है।
(सू०–नज्म–53/57,58)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
बल्कि उनका वायदा तो क़यामत है और क़यामत की घड़ी बहुत ही सख़्त और बहुत ही तल्ख़ है।
(सू०–क़मर–54/46)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
और वो कहते है कि ये वाअ़दा ए (आख़िरत)

कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो फ़रमां दीजिये तुम्हारे लिये वाअ़दे का दिन मुक़र्रर है न तुम उससे एक घड़ी पीछे रहोगे और न आगे बढ़ सकोगे। (सू०–सबा–34/29,30)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–
बेशक वो (तो) उस (दिन) को दूर समझ रहे हैं और हम उसे क़रीब देख रहे हैं जिस दिन आसमान पिघले हुये ताँबे की तरह हो जायेगा और पहाड़ (धुनकी हुई) रंगीन ऊन की तरह हो जायेंगे।
(सू०–मअ़ारिज–70/6-ता–9)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–
ऐ लोगों अपने रब से डरते रहो बेशक क़यामत का ज़लज़ला बड़ी सख़्त चीज़ है।
(सू०–हज–22/1)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–
लोगों के लिये उनके हिसाब का वक़्त क़रीब आ पहुँचा मगर ग़फ़लत में (पड़े ताअ़त से) मुँह फेरे हुये हैं उनके पास उनके रब की जानिब से जब भी कोई नसीहत आती है तो वो उसे यूँ (बे परवाही से) से सुनते हैं गोया वो खेलकूद में लगे हुये हैं उनके दिल ग़ाफ़िल हो चुके है।
(सू०–अम्बिया–21/1-ता–3)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

बेशक (आख़िरत का) जो वाअ़दा तुमसे किया जा रहा है वो बिल्कुल सच्चा है और बेशक (आअ़माल की) जज़ा व सज़ा ज़रुर वाक़ैअ़ होकर रहेगी और क़सम है रास्तों वाले आसमान की बेशक तुम बे जोड़ (मुख़्तलिफ़) बातों में पड़े हो इस (आख़िरत की हक़ीक़त) से वही मुँह मोड़ता है जो (हक़ से) फिरा हुआ है ज़न (गुमान) व तख़मीन (अटकल, अंदाज़े) से झूट बोलने वाले हलाक हो गये जो जहालत व ग़फ़लत में (आख़िरत को) भूल जाने वाले हैं पूछते हैं योमे जज़ा कब होगा (फ़रमां दीजिये) उस दिन (होगा जब) वो आतिशे दोज़ख़ में तपाये जायेंगे (उनसे कहा जायेगा) अपनी सज़ा का मज़ा चखो यही वो अ़ज़ाब है जिसे तुम जल्दी माँगते थे।
(सू०-ज़ारिआत-51/5-ता-14)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

बल्कि (क़यामत) उन्हें अचानक आ पहुँचेगी तो उन्हें बद हवास कर देगी सो वो न तो उसे लौटा देने की ताक़त रखते होंगे और न ही उन्हें मुहलत दी जायेगी। (सू०-अम्बिया-21/40)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

और आप उनको क़रीब आने वाली आफ़त से डरायें जब ज़ब्ते ग़म से कलेजे मुँह को आयेंगे।
(सू०-ग़ाफ़िर/मोमिन-40/18)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है तो वो बादल को उभारती हैं फिर वो उस (बादल) को फ़ज़ा-ए-आसमानी में जिस तरह चाहता है फैला देता है फिर उसे (मुतफ़र्रिक़) टुकड़े (करके तै ब तै) कर देता है फिर तुम देखते हो कि बारिश उसके दरमियान से निकलती है फिर जब उस (बारिश) को अपने बन्दों में से जिन्हें चाहता है पहुँचा देता है तो वो फ़ौरन खुश हो जाते हैं अगरचा उन पर बारिश के उतारे जाने से पहले वो लोग मायूस हो रहे थे सो आप अल्लाह की रहमत के असरात की तरफ़ देखिये कि वो किस तरह ज़मीन को उसकी मुरदनी के बाद ज़िन्दा फ़रमां देता है बेशक वो मुर्दों को (भी इसी तरह) ज़रुर ज़िन्दा करने वाला है और वो हर चीज़ पर खूब क़ादिर है ।

(सू०-रुम-30/48-ता-50)

-: ईमान मदीने में सिमट आयेगा :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ईमान मदीना में ऐसे सिमट कर आ जायेगा जैसे साँप सिमटकर अपने बिल की तरफ़ सिमट जाता है।
(इब्ने माजा-सुनन-2/469-ह०-3111)
(बुख़ारी-सही-2/384-ह०-1876)
(मुस्लिम-सही-1/245-ह०-374)

-: दीन का सलामत न रहना :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि लोगों पर एक ज़माना ऐसा आयेगा कि दीनदार आदमी का दीन सलामत न रहेगा सिवाये उस शख़्स के जो अपना दीन बचाने के लिये किसी पहाड़ी की चोटी से दूसरी चोटी पर या एक सुरंग से दूसरी सुरंग में अपने दीन को साथ लेकर भागता फिरे फिर जब ऐसा ज़माना आ जाये तब माअ़शियत (रोज़ी, वो चीज़े जिससे ज़िन्दगी बसर की जाये) सिर्फ़ उन्हीं ज़राऐ से हासिल होंगी जिनसे अल्लाह तआ़ाला नाराज़ होगा और जब ऐसा ज़माना आ जाये तो उस वक़्त आदमी की हलाकत की वजह उसकी बीवी

या उसकी औलाद होगी और अगर किसी की बीवी और औलाद न हुई तो उसके वालिदैन उसकी हलाकत का सबब होंगे और अगर उसके वालिदैन न हुये तो उसकी हलाकत उसके क़रीबी रिश्तेदार या हम सायों के हाथों होगी सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ऐसा क्यों कर होगा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो उसे माल की कमी का ताअ़ना देंगे जिसकी वजह से वो माल व दौलत को पाने के लिये खुद को ऐसे कामों में मुलव्विस कर लेगा जो उसकी हलाकत का बाइस होगा। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब–3/299-ह०–4152)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि (वो ज़माना) नज़दीक है कि जिस वक़्त मुसलमान का उ़म्दाह सरमाया (पूँजी) बकरियाँ होंगी कि जिनको लेकर वो पहाड़ों की चोटियों में चला जायेगा और वो पानी पड़ने की जगह पर रहेगा और वो दीन को फ़ित्नों से बचाने की वजह से पहाड़ों पर निकल जायेगा।
(नसाई–सुनन–3/476-ह०–5042)

ईमान बचाना गोया हाथ में आग लेना

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि लोगों पर एक ऐसा ज़माना आयेगा जिसमें अपने दीन पर साबित क़दम रहने वाले की मिसाल ऐसी होगी जैसे कोई शख़्स आग के अंगारों से मुट्ठी भर ले (तिर्मिज़ी–सुनन–2/139-ह०–2260)

–: आदमी सुबह मोमिन और शाम को काफ़िर होगा :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उन फ़ित्नों के ज़ाहिर होने से जल्दी जल्दी नेक आअ़माल कर लो वो फ़ित्ने जो अंधेरी रात की तरह छा जायेंगे यहाँ तक कि आदमी सुबह ईमान वाला होगा और शाम को काफ़िर होगा या शाम को ईमान वाला होगा और सुबह काफ़िर होगा और दुनियाँवी माल की ख़ातिर वो अपने दीन को बेच डालेगा।
(मुस्लिम–सही–1/211-ह०–313)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/95-ह०–2197)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/156-ह०–2774)

-: दौरे फ़ितन में इ़बादत का सवाब :-

➡ हज़रत माअ़क़िल बिन यसार (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया फ़ित्ना और फ़साद के ज़माने में इ़बादत करने का सवाब मेरी तरफ़ हिजरत करने के बराबर है।
(इब्ने माजा-सुनन-3/291-ह०-3985)
(मुस्लिम-सही-6/464-ह०-7400)

-: लोग मस्जिदों पर फ़ख़्र करेंगे :-

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक कि लोग मस्जिदों पर फ़ख़्र न करने लगेंगे यानी लोग तकब्बुर व रिया की नियत से एक दूसरे से बढ़कर उ़म्दाह-उ़म्दाह मस्जिदें ताअ़मीर करेंगे और एक दूसरे की तक़लीद में एक दूसरे से आगे बढ़ने की नियत से मस्जिदें ताअ़मीर करेंगे और उनका मक़सद रज़ाऐ इलाही न होगा।
(अबू दाऊद-सुनन-1/377-ह०-449)
(नसाई-सुनन-1/288-ह०-692)

–: मस्जिदों में कोई मोमिन न होगा :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि लोगों पर एक ऐसा ज़माना भी आयेगा कि वो मस्जिदों में इकट्ठे होंगे और बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ेंगे लेकिन उनमें एक भी मोमिन न होगा।
(इब्ने अबी शैबा–6/163-ह०–30355,7/505-37586)
(इमाम हाकिम–अल मुस्तदरक–4/489-ह०–8365)
(इमाम दैलमी–अल फ़िरदौस–5/441–ह०–8680)
(इमाम हाकिम फ़रमाते हैं कि ये हदीस सहीह है)

इ़ल्म उठना, जहालत फैलना, बदकारी अ़ाम, शराब नोशी व मर्दो की कि़ल्लत

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत की निशानियों में से ये भी है कि इ़ल्म उठ जायेगा जहालत फैल जायेगी बदकारी (ज़िनाकारी) अ़ाम हो जायेगी शराबें पी जायेंगी और मर्द कम रह जायेंगे और अ़ौरतें ज़्यादा हो जायेंगीं यहाँ तक कि पचास अ़ौरतों का इन्तिज़ाम एक मर्द करेगा।
(इब्ने माजा–सुनन–3/314-ह०–4045)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/98-ह०–2205)
(बुख़ारी–सही–1/132-ह०–82,ह०–5231,ह०–6808)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत की निशानियों में से है कि इ़ल्म उठ जायेगा (यानी दीन का इ़ल्म लोग कम हासिल करेंगे और दुनियाँ की मुहब्बत व रग़बत और तलब में मुब्तिला हो जायेंगे) और जहालत फैल जायेगी और शराबें पी जायेंगीं और ज़िना ज़ाहिर यानी खुल्लम खुल्ला होगा और मर्द कम हो जायेंगे यहाँ तक कि पचास औ़रतों के लिये एक मर्द होगा जो उनकी ख़बर गीरी करेगा (यानी लड़ाइयों में मर्द बहुत मारे जायेंगे) और औ़रतें रह जायेंगी।
(मुस्लिम–सही–6/261-ह०–6785,6786)
(बुख़ारी–सही–5/196-ह०–5231)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/98-ह०–2205)
(इब्ने माजा–सुनन–3/314-ह०–4045)

➡ हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि लोगों पर ऐसा वक़्त ज़रुर आयेगा कि आदमी सद्क़े का सोना लेकर फिरेगा मगर वो किसी ऐसे शख़्स को न पायेगा जो उसके माल को कुबूल कर ले (यानी उस वक़्त अक्सर लोग बहुत मालदार होंगे और उन पर कसीर माल होगा) और इन्सान ये मन्ज़र भी देखेगा कि मर्दो क़िल्लत और औ़रतों की कसरत होगी और चालीस औरतें एक मर्द की पनाह में होंगी। (बुख़ारी–सही–2/153-ह०–1414)

क़यामत से क़ब्ल इमाम क़लील होंगे

➡ सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत की निशानियों में से एक निशानी ये भी है कि अहले मस्जिद इमामत के लिये एक दूसरे पर टालेंगे और उनको कोई इमामत करने वाला न मिलेगा।
(अबू दाऊद–सुनन–1/464-ह०–581)

क़यामत से क़ब्ल इमाम उठा लिये जायेंगे

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के क़रीब अल्लाह तआ़ला इस तरह इ़ल्म न उठायेगा कि लोगों के दिलों से इ़ल्म निकाल ले बल्कि इस तरह उठायेगा कि आ़लिमों को ही उठा लेगा यहाँ तक कि कोई आ़लिम न रहेगा तो लोग अपने जाहिलों को अपना सरदार बना लेंगे और जब उनसे मसाइल पूछे जायेंगे तो वो बग़ैर इ़ल्म के फ़तवा देंगे और खुद भी गुमराह होंगे और लोगों भी गुमराह करेंगे।
(मुस्लिम–सही–6/262-ह०–6796)
(बुख़ारी–सही–1/144-ह०–100)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/426-ह०–2652)
(इब्ने माजा–सुनन–1/46-ह०–52)

–: क़यामत क़ायम न होगी जब तक अल्लाह अल्लाह कहा जाता रहेगा :–

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत क़ायम न होगी जब तक ज़मीन पर अल्लाह अल्लाह कहा जाता रहेगा। (मुस्लिम–सही–1/245-ह०–375)

–: वक़्त का सिकुड़ना, इ़ल्म का उठना, क़त्ल व ज़लज़लों की कसरत :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत से पहले ज़माना बाहम क़रीब हो जायेगा यानी वक़्त सिकुड़ जायेगा यानी वक़्त बेबरकती की वजह से जल्द गुज़रेगा और इ़ल्म उठा लिया जायेगा और फ़ित्ने ज़ाहिर होंगे और बुख़्ल डाल दिया जायेगा और हर्ज की कसरत हो जायेगी सहाबा–किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ये हर्ज क्या है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़त्ल ही क़त्ल (मुस्लिम–सही–6/262-ह०–6792)
(इब्ने माजा–सुनन–3/317-ह०–4052)
(अबू दाऊद–सुनन–5/268-ह०–4255)
(मुस्लिम–सही–6/413-ह०–7257)

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के क़रीब दीन इस्लाम मिटने के क़रीब हो जायेगा यहाँ तक कि किसी को भी रोज़ा, नमाज़, कुर्बानी और सद्क़ा (बग़ैराह के मुताअ़ल्लिक़ किसी क़िस्म) का इ़ल्म न रहेगा और अल्लाह की किताब एक ही रात में ऐसे ग़ायब हो जायेगी कि ज़मीन में उसकी एक आयत भी बाक़ी न रहेगी और इन्सानों में कूछ क़बाइल (या गिरोह) ऐसे रह जायेंगे कि उनमें बूढ़े मर्द और बूढ़ी अ़ौरतें कहेंगी कि हमने अपने आबाओ अजदाद को ये कलमा पढ़ते सुना ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' इसलिये हम भी ये कलमा पढ़ते हैं अ़र्ज़ किया गया कि ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' पढ़ने से उन्हें क्या फ़ायदा होगा जब उन्हे नमाज़, रोज़ा, ज़कात व सद्क़ात का इ़ल्म न होगा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' उन्हें दोज़ख़ से निजात दिला देगा।
(इब्ने माजा–सुनन–3/316-ह०–4049)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत क़ायम न होगी हत्ता कि इ़ल्म उठा लिया जायेगा ज़लज़ले बकसरत आयेंगे वक़्त कम हो जायेगा और फ़ित्नों का ज़हूर होगा और क़त्ल व ग़ारत अ़ाम होगी

और तुम्हारे यहाँ माल व दौलत की बहुत कसरत होगी।
(बुख़ारी–सही–1/625-ह०–1036)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वक़्त बड़ी तेज़ी से गुज़रेगा और अ़मल कम होते जायेंगें और दिलों में बख़ीली समा जायेगी और हर्ज (क़त्ल) बहुत ज़्यादा बढ़ जायेगा तो लोगों ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह हर्ज क्या है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया खूँरेंज़ी और क़त्लो ग़ारत।
(बुख़ारी–सही–5/599-ह०–6037)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है ताजदारे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत क़ायम न होगी यहाँ तक कि ज़माना क़रीब हो जाये और साल एक माह के बराबर और एक महीना एक हफ़्ता के बराबर और एक हफ़्ता एक दिन के बराबर और एक दिन एक साअ़त के बराबर हो जायेगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/192-ह०–2332)

क़यामत से पहले क़त्ल की कसरत होगी

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द और हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत से कुछ अरसा पहले का ज़माना ऐसा होगा कि उसमें (चारों तरफ़) जहालत उतरेगी इ़ल्म उठा लिया जायेगा और हर्ज ज़्यादा होगा (हर्ज खूँरेजी व क़त्लो ग़ारत को कहते हैं)।
(बुख़ारी–सही–6/383-ह०–7062,7063)
(मुस्लिम–सही–6/261-ह०–6788)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/96-ह०–2200)
(इब्ने माजा–सुनन–3/316-ह०–4050,4051)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत क़ायम न होगी यहाँ तक कि माल (ज़्यादा होने की वजह से पानी की तरह) बहने लगे और फ़ित्ने ज़ाहिर होंगे और हर्ज ज़्यादा हो जायेगा तो सहाबा–किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह हर्ज क्या है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क़त्ल क़त्ल क़त्ल तीन बार फ़रमाया।
(इब्ने माजा–सुनन–3/315-ह०–4047)

मुसलमान एक दूसरे को क़त्ल करेंगे

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मेरे लिये ज़मीन को लपेट दिया यानी तमाम ज़मीन को समेट कर मेरे सामने कर दिया पस मैंने उसका पूरब और पश्चिम सब देख लिया और अ़नक़रीब मेरी उम्मत की सल्तनत व हुकूमत वहाँ तक पहुँचेगी जहाँ तक ज़मीन मुझको दिखाई गई है और मुझको दो ख़ज़ाने अ़ता हुये जिनमें एक सुर्ख़ और एक सफेद है और मैंने अपने रब से दुआ़ की कि मेरी उम्मत को आ़म क़ह्त साली से हलाक न करना और इस पर कोई ऐसा ग़ैर दुश्मन भी ग़ालिब न करना कि उनका जत्था टूट जाये और उनकी जड़ें कट जायें यानी बिल्कुल नेस्त व नाबूद न करना तो मेरे रब ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) जब मैं कोई हुक्म कर देता हूँ फिर वो पलटता नहीं है मैंने तेरी ये दुआ़यें क़ुबूल कर लीं और मैं तेरी इस उम्मत को आ़म क़ह्त साली से हलाक न करूँगा और न इन पर कोई ग़ैर दुश्मन मुसल्लत करूँगा जो इन्हें हलाक कर दे अगरचा इनके ख़िलाफ़ ज़मीन के चारों अतराफ़ के सब लोग जमाअ़ हो जायें फिर भी उन्हें हलाक न कर सकेंगे अलबत्ता खुद मुसलमान आपस में एक दूसरे को हलाक करेंगे और एक दूसरे को क़ैद

करेंगे मुझे अपनी उम्मत पर गुमराह इमामों का ख़ौफ़ है।
(मुस्लिम–सही–6/413-ह०–7258)
(अबू दाऊद–सुनन–5/265-ह०–4252)

क़ातिल न जानेगा कि क्यूँ क़त्ल किया और मक़्तूल न जानेगा क्यूँ क़त्ल हुआ

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है कि दुनियाँ उस वक़्त तक ख़त्म न होगी जब तक कि लोगों पर ऐसा वक़्त न आ जाये कि जिसमें क़ातिल को ये इ़ल्म न होगा कि उसने क्यों क़त्ल किया और मक़्तूल को ये ख़बर न होगी कि वो क्यों क़त्ल किया गया सहाबा–किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ये किस तरह होगा पस आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बा कसरत फ़साद व क़त्लो ग़ारत और खूँरेंज़ी होगी कि लोग ना हक़ मारे जायेंगे और क़ातिल व मक़्तूल अपनी अपनी (बद नियती और बद इरादे की वजह से) दोंनों दोज़ख़ में होंगे।
(मुस्लिम–सही–6/430-ह०–7303)
(दैलमी–मुस्नद अल फ़िरदौस–4/371-ह०–7074)

–: इमामों का क़त्ल :–

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़सम है उस पाक परवर दिगार की जिसके दस्ते कुदरत में मेरी जान है क़यामत क़ायम न होगी जब तक तुम अपने इमामों को क़त्ल न करोगे और आपस में एक दूसरे को अपनी तलवारों से न मारोगे और जब तक तुम्हारी दुनियाँ के वारिस बदतर लोग न होंगे यानी हुकूमत और इमारत (दौलत मंदी) फुस्साक़ (बदकारी व गुनाह करने वालों) की होगी (तिर्मिज़ी–सुनन–2/67-ह०–2170)

–: माल की इन्तिहाई कसरत होगी कि सद्क़ा लेने वाला न मिलेगा :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत उस वक़्त तक बरपा न होगी जब तक तुम्हारे पास माल की इस क़दर कसरत न हो जाये कि वो पानी की तरह बहने लगे यहाँ तक कि मालदार को ये चीज़ परेशान कर देगी कि उसके सद्क़े को कौन कुबूल करे और नौबत यहाँ तक पहुँच जायेगी कि एक शख़्स दूसरे को माल पेश करेगा

तो वो जवाब देगा कि मुझे इसकी ज़रुरत नहीं।
(बुख़ारी–सही–2/152-ह०–1412)
(मुस्लिम–सही–3/44-ह०–2340)
(नसाई–सुनन–3/287-ह०–4463)
(इब्ने माजा–सुनन–3/315-ह०–4047)

➡ हज़रत हारिसा बिन वह्ब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ लोगो सद्क़ा किया करो क्योंकि तुम पर एक ऐसा वक़्त आयेगा कि आदमी अपना सद्क़ा लिये हुये फिरेगा मगर कोई शख़्स ऐसा न मिलेगा जो उसके सद्क़े को कुबूल करे जब एक शख़्स किसी दूसरे शख़्स को सद्क़ा देगा तो वो कहेगा अगर तू कल मुझे सद्क़ा देता तो मैं ले लेता लेकिन मुझे आज इसकी कोई ज़रुरत नहीं।
(बुख़ारी–सही–2/151-ह०–1411)
(मुस्लिम–सही–3/43-ह०–2337)
(नसाई–सुनन–2/164-ह०–2559)
(बुख़ारी–सही–6/408-ह०–7120)

➡ हज़रत इब्ने हातिम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी यहाँ तक कि तुम में से एक अपना सद्क़ा लेकर फिरेगा मगर उसे कुबूल करने वाला नहीं मिलेगा फिर रोज़े क़यामत तुममें

से हर शख़्स अल्लाह के सामने खड़ा होगा जबकि उसके और अल्लाह तअ़ाला के दरमियान कोई पर्दा हाइल न होगा और न कोई तरजुमान होगा जो उसकी गुफ़्तगू को नक़ल करे बिला शुबा फिर अल्लाह तअ़ाला उससे फ़रमायेगा क्या मैंने तुझे माल न दिया था तो वो अ़र्ज़ करेगा क्यों नहीं फिर अल्लाह तअ़ाला फ़रमायेगा क्या मैंने तेरे पास एक अ़ज़ीम पैग़म्बर नहीं भेजा था वो अ़र्ज़ करेगा क्यों नहीं फिर वो अपनी दाँयी तरफ़ देखेगा तो उसे आग के सिवा उसे कोई चीज़ नज़र नहीं आयेगी और जब वो बाँयी तरफ़ नज़र डालेगा तो उधर भी सिवाय आग के कुछ भी नज़र नहीं आयेगा लिहाज़ा तुममें से हर शख़्स को आग से बचना चाहिये अगरचा खजूर का एक टुकड़ा ही दें अगर ये भी मुम्किन न हो तो अच्छी बात कह दें (क्योंकि ये भी सद्क़ा है)।
(बुख़ारी–सही–2/152-ह०–1413)
(इब्ने माजा–सुनन–1/624-ह०–1843)
(मुस्लिम–सही–3/46-ह०–2348)

–: सूरज का मग़रिब से तुलूअ़ होना :–

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क्या तुम्हें मालूम है कि ये सूरज कहाँ जाता है तो अ़र्ज़ किया गया कि अल्लाह व उसके रसूल को खूब इ़ल्म है तो

आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ये सूरज अ़र्श के नीचे जाकर अपने रब को सज्दा करता है और फिर अल्लाह तबारक व तआ़ाला से इजाज़त तलब करता है तो उसे इजाज़त दे दी जाती है और वो दिन भी क़रीब है जब सूरज सज्दा करेगा तो उसका सज्दा कुबूल न होगा और वो इजाज़त तलब करेगा तो उसे इजाज़त न मिलेगी बल्कि उसे हुक्म होगा कि जहाँ से आये हो उधर ही चले जाओ फिर वो सूरज मग़रिब से तुलूअ़ होगा जैसा कि अल्लाह तआ़ाला का इरशादे गिरामी है ''और सूरज हमेशा अपने मुक़र्रा मन्ज़िल के लिये (बग़ैर रुके) चलता रहता है''। (सू०-यासीन-36/38)
(बुख़ारी-सही-3/448-ह०-3199)
(मुस्लिम-सही-1/259-ह०-401)
(बुख़ारी-सही-6/573-ह०-7424)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत क़ायम न होगी यहाँ तक कि आफ़ताब मग़रिब से तुलूअ़ न हो और जब आफ़ताब (मग़रिब से) तुलूअ़ होगा और लोग उसे देख लेंगे तो अहले ज़मीन ईमान ले आयेंगे लेकिन ये वक़्त वही होगा जब ईमान लाना उन लोगों के लिये फ़ायदेमंद न होगा (जैसा कि अल्लाह तआ़ाला इरशाद फ़रमाता है- ''जिस दिन आपके रब की बाअ़ज़ निशानियाँ आ

पहुँचेगी (तो उस वक़्त) ऐसे किसी शख़्स का ईमान उसे फ़ायदा नहीं पहुँचायेगा जो पहले से ईमान नहीं लाया था या उसने अपने ईमान (की हालत) में अच्छे आअ़माल न किये होंगे फ़रमां दीजिये तुम इन्तिज़ार करो और हम भी मुन्तज़िर हैं। (सू०–अनअ़ाम–6/158)
(इब्ने माजा–सुनन–3/323-ह०–4068)
(अबू दाऊद–सुनन–5/303-ह०–4312)

➡ हज़रत सफ़वान बिन अस्साल (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है सरकारे दो अ़ालम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मग़रिब की तरफ़ एक दरवाज़ा खुला हुआ है जिसकी चौड़ाई सत्तर बरस (की मुसाफ़त) है और ये दरवाज़ा तौबा के लिये बराबर खुला रहेगा जब तक कि सूरज उस तरफ़ यानी मग़रिब से तुलूअ़ न हो सो जब आफ़ताब उस जानिब से तुलूअ़ हो जायेगा तो उस वक़्त किसी का भी ईमान लाना उसे फायदेमंद न होगा।
(इब्ने माजा–सुनन–3/323-ह०–4070)
(मुस्लिम–सही–1/256-ह०–396)

–: जब मुआ़शरे में 15 बातें ज़ाहिर हों तब बलाओं का नुजूल होगा :–

➡ हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब मेरी उम्मत में पन्द्रह (15) काम होने लगें तो उन पर बलायें उतरेंगी पस सहाबा-किराम ने अ़र्ज़ किया या-रसूलल्लाह वो पन्द्रह काम कौन से है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि (1) जब महसूलात दौलत हो जाये और (2) अमानत ग़नीमत हो जाये (यानी अमानत में ख़यानत की जाये) (3) ज़कात को क़र्ज़ समझा जाये (4) आदमी अपनी बीवी की इताअ़त करना शुरु कर दे और अपनी माँ की नाफ़रमानी करने लगे (5) मस्जिदों में आवाज़े ऊँची होना शुरु हो जायें (6) आदमी अपने दोस्त से अच्छा सुलूक करे और अपने बाप से बुरा सुलूक करे (7) आदमी की इ़ज़्ज़त महज़ उसके शर से महफ़ूज़ रहने के लिये की जाये (8) क़ौम का बदतरीन आदमी क़ौम का हुक्मरान बन जाये (9) क़बीले का बदकार शख़्स उनका सरदार बन जाये (10) गाने वाली औ़रतें आ़म हो जायें (11) गाने बजाने का सामान आ़म हो जाये (12) शराबें पी जायें (13) रेशम पहना जाये (14) बाद वाले लोग पहले के लोगों को लाअ़न तान से याद करें (15) ग़ैर दीनी कामों के लिये इ़ल्म हासिल किया जाये तो

उस वक़्त सुर्ख आँधी, ज़लज़ले, ज़मीन में धंस जाने, शक्लें बिगड़ जाने, और आसमान से पत्थर बरसने और तरह तरह के मुसलसल अ़ज़ाबों का इन्तिज़ार करो ये निशानियाँ एक के बाद एक ज़ाहिर होगी जिस तरह किसी हार का धागा टूट जाने से गिरते मोतियों का ताँता बंध जाता है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/101-2211)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/315-ह०–469)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–4/5-ह०–4544)

–: जब मुसलमान छः चीज़ों को हलाल जानेंगे तब तबाही नाज़िल होगी :–

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब मेरी उम्मत छः चीजों को हलाल समझने लगेगी तब उन पर तबाही नाज़िल होगी जब उनमें बाहमी लाअ़नत व मलामत आ़म हो जायेगी और लोग कसरत से शराब पियेंगे, मर्द रेशमी लिबास पहनेंगे, लोग गाने बजाने और रश्क (नाचने) वाली औ़रतें रखने लगेंगे और मर्द मर्दों से और औरतें औरतों से जिन्सी लज़्ज़त हासिल करेंगी।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/18-ह०–1086)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/377-ह०–5469)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–6/123)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–3/71-ह०–3123)

-: क़यामत की दस निशानियाँ :-

➡हज़रत हुज़ैफ़ा बिन असीद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत क़ायम न होगी यहाँ तक कि दस निशानियाँ ज़ाहिर न हों सूरज का मग़रिब से तुलूअ़ होना, दज्जाल का ज़ाहिर होना, और दुख़ान यानी धुआँ, दाब्बतुल अर्ज़ (ज़मीन से निकलने वाला एक जानवर) का निकलना, खुरूजे याजूज माजूज, हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) की आमद, और तीन निशानियाँ ज़मीन का धंसना एक मशरिक़ में और एक मग़रिब में और एक जज़ीरा अ़रब में और इन सब निशानियों के बाद एक आग पैदा होगी जो लोगों को यमन से निकालेगी और हाँक कर शाम की तरफ़ ले जायेगी दिन और रात में जब लोग आराम की ख़ातिर ठहरेंगे तो आग भी ठहर जायेगी (मैदाने महशर शाम की ज़मीन होगी)।
(मुस्लिम–सही–6/425-ह०–7285)
(इब्ने माजा–सुनन–3/318-ह०–4055)
(अबू दाऊद–सुनन–5/302-ह०–4311)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/76-ह०–2183)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया–

पाँच वाक़िआत गुज़र चुके हैं धुआँ (जब मक्का में क़ह्त पड़ा तब आदमी आसमान की तरफ़ देखता था तो मशक़्क़त की वजह से उसे अपने और आसमान के दरमियान सिर्फ़ धुंआँ नज़र आता था और ये रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की बद्दुआ़ के सबब था ग़लबा-ए-रोम, चाँद का फटना, सख़्त गिरफ़्त और सज़ा व क़ैद (जो ग़ज़वये बदर में वाक़ैअ़ हुआ)
(बुख़ारी-सही-4/766-ह०-4820)

इरशादे बारी तआला है-

उस दिन का इन्तिज़ार करें जब आसमान धुंआँ लायेगा। (सू०-दुख़ान-44/10)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) का मौक़िफ़ ये है कि दुख़ान का वाक़िआ़ गुज़र चुका है लेकिन दुख़ान (धुंआँ) दो हैं उनमें से एक नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के ज़माने में गुज़र चुका है और दूसरा क्यामत के क़रीब ज़ाहिर होगा जैसा कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) का फ़रमान है कि क्यामत क़ायम न होगी जब तक कि तुम दस निशानियाँ न देख लो और उनमें धुंऐं और दज्जाल का भी ज़िक्र किया है।

इरशादे बारी तआला है-

ऐ रब हमसे अ़ज़ाब को दूर करदे हम ज़रुर ईमान ले आयेंगे। (सू०-दुख़ान-44/12)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि जब कुरैश ने नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की नाफ़रमानी की तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने बद्दुआ़ फ़रमाई कि ऐ मेरे परवर दिगार इनके ख़िलाफ़ मेरी मदद ऐसे क़ह्त के ज़रिये से फ़रमां जैसे कि यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में क़ह्त पड़ा था तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की बद्दुआ़ के नतीज़े में उन्हें खुश्क साली ने पकड़ लिया और ऐसा क़ह्त पड़ा कि भूक की वजह से लोग हड्डियाँ व मुर्दार तक खाने लगे और जब लोग आसमान की तरफ़ देखते थे तो भूक और फ़ाक़े की वजह से धुंऐं के सिवा उन्हें कुछ भी नज़र नहीं आता था आख़िर उन्होंने कहा ऐ हमारे रब हमसे इस अ़ज़ाब को दूर करदे हम ज़रुर ईमान ले आयेंगे फिर आपसे कहा गया कि अगर हमने उनसे ये अ़ज़ाब दूर कर दिया तो वो फिर अपनी पहली हालत पर आ जायेंगे फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने उनके हक़ में दुआ़ फ़रमाई तो वो अ़ज़ाब उनसे टल गया लेकिन वो फिर से कुफ़्र व शिर्क करने लगे चुनाँचा अल्लाह तबारक व

तआ़ला ने बदर के दिन उनसे इन्तिक़ाम लिया जैसा कि कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है "जिस दिन हम बड़ी सख़्त गिरफ़्त करेंगे तो (उस दिन) हम यक़ीनन इन्तिक़ाम ले ही लेंगे" (सू०–दुख़ान–44/16)
(बुख़ारी–सही–4/764-ह०–4822)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत की एक निशानी आग है जो लोगों को मशरिक़ से मग़रिब की जानिब हाँक कर ले जायेगी और सबसे पहला ख़ाना जो अहले जन्नत तनावुल करेंगे वो मछली के जिगर के साथ बढ़ा हुआ टुकड़ा होगा।
(बुख़ारी–सही–3/508-ह०–3329)

जानवर मक्का के क़रीब से निकलेगा

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि मैं नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के साथ मक्का के क़रीब एक जंगल में था वहाँ खुश्क ज़मीन थी और उसके इर्द गिर्द रेत थी फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया दाब्बतुल अर्ज़ (ज़मीन का जानवर) इस जगह से निकलेगा वो जगह तक़रीबन एक बालिश्त थी।
(इब्ने माजा–सुनन–3/322-ह०–4067)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि एक जानवर नमूदार होगा उसके पास हज़रत सुलेमान (अ़लैहिस्सलाम) की अंगूठी और हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) का असा होगा वो असा से मोमिन के चेहरे को रौशन करेगा और अंगूठी से काफ़िर की नाक पर निशान लगायेगा हत्ता कि एक जगह लोग जमाअ़ होंगे तो एक कहेगा ऐ मोमिन और दूसरा कहेगा ऐ काफ़िर यानी एक दूसरे को निशान से पहचान लेंगे) (इब्ने माजा–सुनन–3/322-ह–4066)

–: ज़मीन में धंसना, शक्लें बिगड़ना और आसमान से पत्थर बरसना :–

➡ हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इस उम्मत के अन्दर ज़मीन में धंसने शक्लें बिगड़ने और आसमान से पत्थर बरसने का अ़ज़ाब नाज़िल होगा तो किसी सहाबी ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ऐसा कब होगा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब गाने और नाचने वाली औरतें और गाने बजाने का सामान आ़म हो जायेगा और जब शराबें सरे आ़म पी जायेंगी (इब्ने माजा–सुनन-3/320-ह–4059) (तिर्मिज़ी–सुनन–1/102-ह०-2212 व 2/78-ह०–2185)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अनस बेशक लोग शहर आबाद करेंगे और उन शहरों में एक शहर ऐसा है जिसे बसरा कहा जायेगा पस अगर तुम उसके पास से गुज़रो या उसमें दाख़िल हो तो उसकी सिबाख़ (कलरज़दा, रतूबत वाली ज़मीन) से बचकर रहना और उसकी कल्ला (जगह का नाम) से दूर रहना और उसके बाज़ारों और उसके अम्रा के दरवाज़ों से भी बचना और तुम पर लाज़िम है कि उसके अतराफ़ व जंगलों की तरफ़ रुख करना इसलिये कि बिला शुबा उस ज़मीन में धंसने व पत्थर बरसने और ज़लज़ले अ़ज़ाब की शक्ल में वाक़ेअ़ होंगे और वहाँ ऐसे लोग भी होंगे जो (शाम को सही सलामत होंगे मगर) सुबह को बन्दर और सुअर बन चुके होंगे। (अबू दाऊद–सुनन–5/300-ह०–4307)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सफ़वान बयान करते हैं कि उम्मुल मोमिनीन सय्यदा हफ़्सा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) ने मुझे बताया कि मैंने नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से सुना है कि एक लश्कर उस घर यानी ख़ाना ए काअ़बा को गिराने का इरादा करेगा तो अहले मक्का उससे लड़ेंगे फिर जब वो लश्कर मक़ामे बैदाअ़ में पहुँचेगा तो सब लोग ज़मीन में धंस जायेंगे और कोई भी न बचेगा सिवाये एक क़ासिद

के जो उनका हाल बतायेगा।
(बुख़ारी–सही–2/504-ह०–2118)
(मुस्लिम–सही–6/408-ह०–7240)
(इब्ने माजा–सुनन–3/321-ह०–4063)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/78-ह०–2184)
(नसाई–सुनन–2/267-ह०–2884)

–: दीगर क़ौमें मुसलमानों को मिटाने की साजिश करेंगी :–

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो वक़्त क़रीब है कि जब दीगर अक़वाम तुम्हें मिटाने के लिये (मिलकर साज़िश करेंगी और) एक दूसरे को इस तरह बुलाऐंगी जैसे दस्तरख़्वान पर खाना खाने वाले (लज़ीज़) खाने की तरफ़ एक दूसरे को बुलाते हैं किसी ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या उस वक़्त हमारी ताअ़दाद कम होने की वजह से हमारा ये हाल होगा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया नहीं बल्कि तुम उस वक़्त कसीर ताअ़दाद में होगे अलबत्ता उस वक्त तुम सैलाब की झाग की तरह नाकारा होगे और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दुश्मनों के दिल से तुम्हारा रोअ़ब व दबदबा निकाल देगा और तुम्हारे दिलों में बुज़दिली डाल देगा पस सहाबा–किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह बुज़दिली से क्या मुराद है तो

आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनियाँ से मुहब्बत और मौत से बेज़ारी व कराहत।
(अबू दाऊद–सुनन–5/295-ह०–4297)
(अहमद बिन हम्बल–अल मुस्नद–5/278-ह०–2245)

मुसलमानों की तुर्को से जंग का होना

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत उस वक़्त तक न आयेगी जब तक कि मुसलमानों की तुर्को से जंग न हो जाये और ये ऐसे लोग होंगे कि इनके चेहरे ढ़ालों की मान्निद होंगे जिन पर चमड़ा वग़ैराह लगाया गया हो और उनका लिबास बालों का होगा। (नसाई–सुनन–2/368-ह०–3182)
(अबू दाऊद–सुनन–5/298-ह०–4303)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत उस वक़्त तक नहीं आयेगी जब तक कि तुम एक क़ौम से जंग न कर लो जिनके जूते बालों के होंगे और क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक तुम एक कौम से जंग न कर लो जिनकी आँखें छोटी और नाकें चपटी होंगी।
(अबू दाऊद–सुनन–5/298-ह०–4304)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा अपने वालिद से बयान करते हैं कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि एक क़ौम तुमसे जंग करेगी जिनकी आँखें छोटी-छोटी होंगी यानी तुर्कों से और तुम उन्हें तीन बार धकेलोगे हत्ता कि जज़ीरा अ़रब के किनारे पर पहुँचा दोगे पहली दफ़ा धकेलने में उनमें से जो भाग जायेंगे वो निजात पा जायेंगे दूसरी दफ़ा में कुछ बच जायेंगे और कुछ हलाक हो जायेंगे लेकिन तीसरी बार में उनका सफ़ाया कर दिया जायेगा।
(अबू दाऊद-सुनन-5/298-ह०-4305)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम यहूद से लड़ोगे और उन्हें मरोगे यहाँ तक कि पत्थर बोलेगा ऐ मुसलमान ये यहूदी है इसको मार डालो (ये क़यामत के क़रीब होगा)
(मुस्लिम-सही-6/436-ह०-7335)

-: क़यामत बहुत नज़दीक है :-

➡ हज़रत सह्ल बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं और क़यामत इस क़दर नज़दीक भेजे गये हैं कि आप

(सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने अपनी दो उँगलियों से इशारा फ़रमाया फिर उनको फैला दिया। (बुख़ारी–सही–6/85-ह०–6503)
(मुस्लिम–सही–6/465-ह०–7403)

–: क़यामत से क़ब्ल तमाम अहले ईमान की अरवाह का क़ब्ज़ होना :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ाला क़यामत के नज़दीक मुल्के यमन से एक ऐसी हवा चलायेगा जो रेशम से ज़्यादा मुलायम होगी और उसमें मुश्क जैसी खुश्बू होगी फिर ये हवा जिसके दिल में रत्ती या दाने बराबर भी ईमान होगा उसकी रुह क़ब्ज़ कर लेगी (और फिर बदकार व कुफ़्फ़ार लोग ही रह जायेंगे जिन पर क़यामत क़ायम होगी)
(मुस्लिम–सही–1/211-ह०–312)
(मुस्लिम–सही–5/181-ह०–4957)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत क़ायम न होगी जब तक कि लात व उज़्ज़ा फिर से न पूजें जाये (ये दोंनों बुत ज़माना जाहलियत के थे) नीज फ़रमाया क़यामत के क़रीब अल्लाह

तआ़ाला एक पाकीज़ा हवा भेजेगा जिस की वजह से हर मोमिन मर जायेगा ओर वो लोग बाक़ी रह जायेंगे जिनमें भलाई नहीं है फिर वो लोग अपने (मुशरिक) बाप दादाओं के दीन पर लौट जायेंगे। (मुस्लिम–सही–6/429-ह०–7299)

–: क़यामत अचानक वाक़ैअ़ होगी :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी यहाँ तक कि सूरज मग़रिब से तुलूअ़ न हो और जब सूरज मग़रिब से तुलूअ़ होगा और सब लोग उसे देख लेंगे तो सब के सब ईमान ले आयेंगे यही वो वक़्त होगा जब किसी के लिये उसका ईमान नफ़ा न देगा नीज़ फ़रमाया कि क़यामत इस क़दर जल्द आ जायेगी कि दो आदमियों ने कपड़ा खोला होगा लेकिन वो ख़रीद व फ़रोख़्त न कर सकेंगे और न ही वो उसे लपेट सकेंगे और क़यामत क़ायम हो जायेगी जबकि एक आदमी अपनी ऊँटनी का दूध लेकर आ रहा होगा मगर वो उसे पी न सकेगा और क़यामत इस हाल में आयेगी कि एक शख़्स अपना हौज़ तैयार का रहा होगा लेकिन वो उससे पानी न पी सकेगा और क़यामत आ जायेगी और एक आदमी अपना लुक़्मा अपने मुँह की तरफ़ उठायेगा मगर वो उसे खा न सकेगा–

और क़यामत क़ायम हो जायेगी।
(बुख़ारी–सही–6/86-ह०–6506)
(मुस्लिम–सही–6/466-ह०–7413)

–: जब अमानत ज़ाया की जाये तो क़यामत के मुन्तिज़र रहो :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब अमानत ज़ाया की जाये और ईमानदारी दुनियाँ से उठ जाये तो क़यामत क़ायम होने का इन्तिज़ार करो तो अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह अमानत किस तरह ज़ाया की जायेगी और ईमानदारी उठने का क्या मतलब है तो आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब हुकूमत के कारोबार व ज़िम्मेदारियों के काम और मुअ़ामलात जब ना लायक और ना अहल लोगों के सुपुर्द कर दिये जायें तो क़यामत का इन्तिज़ार करो।
(बुख़ारी–सही–1/148-ह०–106)
(बुख़ारी–सही–6/80-ह०–6496)

बुरे लोगों का रुतबा बुलन्द और नेक लोगों का रुतबा गिरा दिया जायेगा

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत की निशानियों में से ये भी है कि मुआ़शरे में बुरे लोगों का रुतबा बुलन्द और नेक लोगों का रुतबा गिरा दिया जायेगा और बहस व मुनाज़रे आ़म हो जायेंगे और अ़मल पर ताले पड़ जायेंगे और लोगों में मस्नाह पढ़ी जायेगी और उनमें से कोई एक भी उसका इन्कार (यानी उसके ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द) नहीं करेगा सहाबा-किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ये मस्नाह क्या है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला की किताब (और उसकी ताअ़लीमात के ख़िलाफ़) जो कुछ भी लिखा गया होगा वो मस्नाह है।

(हाकिम-अल मुस्तदरक-4/597-ह०-8660)
(मजमउज्ज़वाइद-7/326)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि एक दिन हम हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की खिदमत में बैठे थे कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अजनबियों को मुबारक बाद हो सहाबा-किराम ने अ़र्ज़ किया या-रसूलल्लाह अजनबी कौन हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बहुत ज़्यादा बुरे लोगों में वो नेक लोग जो मुआ़शरे में बदी व शर के ग़लबे के बावुजूद हक़ व नेकी पर इस्तिक़ामत से क़ायम रहेंगे व उनकी मुख़ालिफ़त-

करने वालों की ताअ़दाद कसीर होगी और इनकी ताअ़दाद क़लील होगी (मुराद ये कि ये ऐसा दौर होगा जिसमें दीन पर अ़मल करने वाले लोग मुआ़शरे में अजनबी लगेंगे)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–9/14ह०--8986)
(मुस्नद अहमद–2/177-ह०-665 व 2/222-ह०-7072)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–4/64-ह०–4818)
(दैलमी–मुस्नद अल फिरदौस–2/449-ह०-3937)
(मजमउज़्ज़वाइद–10/259)

–: हुक्मरानों का ज़ुल्म बढ़ना और राह गुज़र पर बदकारी आ़म होना :–

➡ हज़रत अबू ज़र गिफ़ारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब ज़माना क़यामत के क़रीब होगा तो रेशम कसरत से पहना जायेगा और तिजारत बढ़ जायेगी और माल की कसरत होगी और माल का सूद असल माल से बढ़ जायेगा और फुह्हाशी बढ़ जायेगी और कम उम्र के लोगों की हुकूमत होगी और औ़रतों की कसरत होगी और हुक्मरानो का ज़ुल्म बढ़ जायेगा व नाप तौल में कमी की जायेगी और आदमी अपने कुत्ते के पिल्ले की निगेहबानी अपने बेटे से बढ़कर करेगा बड़ों की इज़्ज़त नहीं की जायेगी व छोटों पर शफ़क़त नहीं की जायेगी और बदकारी से पैदा होने वाले बच्चों की कसरत होगी

यहाँ तक कि मर्द औ़रत के साथ लोगों की गुज़र गाहों में ही बदकारी करने लगेगा और उस ज़माने में जो बेहतर शख़्स होगा वो उनसे कहेगा तुम्हारी बेहयाई की इन्तिहाँ ये है कि तुम रास्ते से हटना भी गवारा नहीं करते उस ज़माने में भेड़िये का दिल रखने वालों ने भेड़ की खाल पहन रखी होगी (यानी लोग बाहर से नरम मिज़ाज और अन्दर से ज़ालिम व खूँखार होंगे)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–3/386-ह०–5464)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/126-ह०–4860)
(मजमउज्ज़वाइद–7/325)

–: ज़मीन जहालत से भर जायेगी और शिद्दत बढ़ती ही जायेगी :–

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक कि ज़मीन जहालत से न भर जाये।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/99-ह०–2207)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनियाँ में शिद्दत बढ़ती ही जायेगी और दुनियाँ में इदबार (बदनसीबी, नहूसत, तंगदस्ती, ज़िल्लत) बढ़ती ही जायेगी और

लोग बख़ील से बख़ील तर होते ही जायेंगे और क़यामत बदतरीन अफ़राद पर क़ायम होगी और क़ुर्बे क़यामत हज़रत मेंहदी अ़लैहिस्सलाम के बाद कामिल हिदायत याफ़्ता शख़्स सिर्फ़ हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) होंगे।
(इब्ने माजा–सुनन–3/312-ह०–4039)

–: काश मैं क़ब्र वाले की जगह होता :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े क़ुदरत में मेरी जान है कि दुनियाँ उस वक़्त तक ख़त्म न होगी यहाँ तक कि मर्द क़ब्र के पास से गुज़रेगा तो उस पर लोट-पोट होगा और कहेगा ऐ काश मैं इस क़ब्र वाले की जगह में होता और ये दीन और ईमान की वजह से न होगा बल्कि दुनियाँवी मसाइबो आलाम (सख़्त मुसीबतों व परेशानियों) की वजह से होगा।
(बुख़ारी–सही–6/406-ह०–7115)
(इब्ने माजा–सुनन–3/312-ह०–4037)

–: कोई भी सूद से महफ़ूज़ न रहेगा :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि यक़ीनन लोगों–

पर ऐसा दौर भी आयेगा कि जब कोई शख़्स भी सूद से महफ़ूज़ न रहेगा अगर किसी ने बराहे-रास्त सूद न भी खाया हो तब भी सूद का बुख़ार या भाप उसको पहुँचेगी और एक रिवायत के मुताबिक़ सूद का गुबार उसे बहर सूरत पहुँच कर रहेगा। (अबू दाऊद-सुनन-4/647-ह०-3331)
(नसाई-सुनन-6/250-ह०-4461)
(इब्ने माजा-सुनन-2/168-ह०-2278)
(हाकिम-अल मुस्तदरक-2/412-ह०-2162)

-: फ़रात में सोने का पहाड़ निकलेगा :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक कि दरिया-ए-फ़रात में से सोने का पहाड़ न निकले और लोग उस पर बाहम एक दूसरे का क़त्ल करेंगे चुनाँचा हर सौ में से 99 मारे जायेंगे।
(इब्ने माजा-सुनन-3/315-ह०-4046)
(मुस्लिम-सही-6/418-ह०-7272)
(अबू दाऊद-सुनन-5/304-ह०-4313)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़नक़रीब दरिया -ए-फ़रात से सोने का ख़ज़ाना ज़ाहिर होगा और-

तुममें से जो कोई वहाँ मौजूद हो वो उस में से कुछ भी न ले। (बुख़ारी–सही–6/408-ह०–7119)

–: दरिन्दे इन्सानों से बात करेंगे :–

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है कि क़यामत क़ायम न होगी जब तक कि दरिन्दे इन्सानों से बात न करने लगे और जब तक कि आदमी से उसके जूते का तस्मा कलाम न करे और उसकी रान उसको ख़बर देगी उस नये काम से कि उसकी बीवी ने उसके पीछे क्या क्या किया यानी उसकी ग़ीबत में।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/76-ह०–2181)

–: हर बाद में आने वाला साल पहले साल से बदतर होगा :–

➡ ताजदारे कायनात (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर बाद में आने वाला साल पहले साल से बदतर होगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/99-ह०–2206)

क़ुर्बे क़यामत हर ख़्वाब सच्चा होगा

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब ज़माना यक्सा हो जाये (यानी जब दिन रात बराबर हो जायें) तब क़यामत क़रीब आ जायेगी और उस वक़्त मुसलमान का हर ख़्वाब सच्चा होगा और तुममें से सब से सच्चा ख़्वाब उसी का होगा जो बातों में सबसे सच्चा होगा और मुसलमान का ख़्वाब नबूवत के पैतालींस हिस्सों में से एक हिस्सा है और ख़्वाब तीन तरह के होते हैं एक तो अच्छा ख़्वाब जो अल्लाह की तरफ़ से ख़ुशख़बरी होती है और दूसरा बुरा ख़्वाब जो शैतान की तरफ़ से होता है और तीसरा वो ख़्वाब जो सिर्फ़ दिल का ख़्याल होता है और जब तुममें से कोई बुरा ख़्वाब देखे तो खड़ा हो और नमाज पढ़े और और उस बुरे ख़्वाब को लोगों से बयान न करे।
(मुस्लिम–सही–5/400-ह०–5905)
(अबू दाऊद–सुनन–6/764-ह०–5019)

-: मुख़्तलिफ़ अ़लामात :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक कि दो बड़ी जमाअ़ते बाहम सख़्त लड़ाई न करे और उन दोंनों जमाअ़तों के दरमियान बड़ी खूँरेंज़ लड़ाई होगी हालाँकि दोनों का दाअ़वा एक ही होगा और तीस के क़रीब झूठे दज्जाल ज़ाहिर होंगे उनमें से हर एक का दाअ़वा ये होगा कि वो अल्लाह का रसूल है और यहाँ तक कि इ़ल्म उठा लिया जायेगा और ज़लज़लों की कसरत होगी नीज़ ज़माना क़रीब हो जायेगा और फ़ित्नों का ज़हूर होगा और हर्ज यानी क़त्ल व खूँरेंज़ी अ़ाम होगी और यहाँ तक कि तुममे माल की कसरत होगी हत्ता कि वो बह पड़ेगा यहाँ तक कि मालदार को इस बात की फ़िक्र होगी कि उसका सद्क़ा कौन कुबूल करेगा और मालदार अपना सद्क़ा किसी को पेश करेगा तो वो कहेगा कि मुझे इसकी ज़रुरत नहीं और यहाँ तक कि लोग बड़े बड़े महल्लात पर फ़ख़्र करेंगे और यहाँ तक कि आदमी दूसरे की क़ब्र के पास से गुज़रेगा तो कहेगा काश मैं इस क़ब्र में होता और यहाँ तक कि सूरज मग़रिब से तुलूअ़ होगा और लोग उसे देख लेंगे तो सब ईमान ले आयेंगे और ये वो-

वक़्त होगा जब किसी ऐसे शख़्स का ईमान लाना उसे नफ़ा नहीं देगा जो इससे पहले ईमान नहीं लाया था या उसने अपने ईमान के साथ अच्छे अ़मल न किये थे और बिला शुबा क़यामत अचानक इस तरह क़ायम होगी की दो आदमियों ने अपने दरमियान कपड़ा फैला रखा होगा मगर वो उसकी ख़रीद व फ़रोख़्त न कर सकेंगे और न ही उसे लपेट पायेंगे और क़यामत इस तरह बरपा होगी कि आदमी अपनी ऊँटनी का दूध लेकर अपने घर की तरफ़ लौटेगा मगर उस दूध को पी न सकेगा और क़यामत इस तरह क़ायम होगी कि आदमी अपना हौज़ तैयार कर रहा होगा मगर वो उससे पानी न पी सकेगा और यक़ीनन क़यामत इस तरह क़ायम होगी कि एक आदमी ने अपने मुँह की तरफ़ लुक़्मा उठाया होगा मगर वो उसे खा न सकेगा।
(बुख़ारी–सही–6/408-ह०–7121)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक क़यामत के आसार ये हैं कि औलाद (नाफ़रमानी के सबब वालिदैन के लिये) ग़म व गुस्से का बाइस होगी और बारिश के बावुजूद गर्मी होगी और बदकारों का तूफ़ान बरपा होगा और झूठे को सच्चा और सच्चे को झूठा समझा जायेगा और ख़यानत करने वालो को अमीन और

अमीन को ख़यानत करने वाला बतलाया जायेगा और बेगानों से ताअ़ल्लुक़ जोड़ा जायेगा और खूनी रिश्तों से ताअ़ल्लुक़ तोड़ा जायेगा और हर क़बीले की क़यादत उसके मुनाफ़िक़ों के हाथों में होगी और हर बाज़ार की क़यादत बदमाशों के हाथों से होगी और मस्जिदें सजायी जायेंगी और दिल बीरान होंगे और मोमिन (नेक व दयानतदार शख़्स) भेड़ बकरी से ज़्यादा हक़ीर समझा जायेगा और मर्द मर्दों से और औ़रतें औ़रतों से जिन्सी ताअ़ल्लुक़ करेगी और मस्जिदें बहुत ज़्यादा और उनके मिम्बर आलीशान होंगे और दुनियाँ के वीरानों को आबाद और आबादियों को वीरान किया जायेगा और गाने बजाने का सामान आ़म होगा और शराब नोशी की कसरत होगी और मुख़्तलिफ़ अक़साम की शराबें पी जायेंगी और मुआ़शरे में पुलिसवालों, चुग़ली करने वालों और ताअ़ना बाज़ों की ताअ़दाद बहुत ज़्यादा होगी और नाजाइज़ बच्चों की विलादत कसरत से होगी
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–10/221-ह०–10,556)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/127-ह०–4861)

-: दज्जाल का बयान :-

➡ सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि आदम के वक़्त से लेकर क़यामत तक (शर व फ़साद में) दज्जाल से बड़ा कोई फ़ित्ना नहीं है।
(मुस्लिम-सही-6/463-ह०-7395)

दज्जाल काना होगा और उसकी आँखों के दरमियान काफ़िर लिखा होगा

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दज्जाल काना होगा और उसकी दोंनों आँखों के दरमियान में लफ़्ज़े काफ़िर लिखा होगा मगर जो शख़्स उसको व उसके करतूत को बुरा जानेगा वो इस लफ़्ज़ को पढ़ लेगा यानी वही लोग उसके कुफ़्र से आगाह होंगे जो उसके अ़मल से बेज़ार होंगे। (तिर्मिज़ी-सुनन-2/117-ह०-2235)
(बुख़ारी-सही-6/412-ह०-7123)
(मुस्लिम-सही-6/446-ह०-7365)

➡ हज़रत उ़बादा बिन सामित (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दज्जाल-

ठिगने क़द वाला, बाहर निकली हुई पिण्डलियों वाला और बहुत घुँघराले बालों वाला होगा और वो एक आँख से काना होगा जो कि न मिटी हुई होगी और न उभरी हुई होगी और न गहरी होगी फिर भी तुम्हें कोई शुबा हो तो याद रखना कि तुम्हारा रब काना नहीं है।
(अबू दाऊद–सुनन–5/307-ह०–4320)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसने अपनी उम्मत को काने व झूठे दज्जाल से डराया न हो ख़बरदार रहो दज्जाल काना है और तुम्हारा परवर दिगार काना नहीं है और उसकी दोंनों आँखों के दरमियान काफ़िर लिखा होगा।
(मुस्लिम–सही–6/446-ह०–7363)
(अबू दाऊद–सुनन–5/305-ह०–4316)

–: दज्जाल के हाथ में दो नहरें होंगीं:–

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दज्जाल के साथ दो बहती हुई नहरें होंगी उनमें से एक देखने में सफ़ेद पानी सी मालूम होगी और दूसरी देखने में भड़कती हुई आग मालूम होगी फिर जो कोई भी

ये मौक़ाअ़ पाये और उसे देखे तो वो उस नहर में चला जाये जो देखने में आग माअ़लूम होती हो और अपनी आँख बन्द कर ले और सर झुकाकर उस आग वाली नहर में से पिये असल में वो ठण्डा पानी होगा (और वो नहर जो देखने में सफ़ेद पानी मालूम होगी वो असल में भड़कती हुई आग होगी) और दज्जाल की एक आँख बिल्कुल बन्द होगी और उसकी दोंनों आँखों के दरमियान काफ़िर लिखा होगा जिसको हर मोमिन पढ़ लेगा ख़्वाह वो लिखना पढ़ना जानता हो या न जानता हो।
(मुस्लिम–सही–6/447-ह०–7367)

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब दज्जाल निकलेगा तो उसके साथ पानी और आग होगी तो जिसको लोग पानी समझेंगे वो असल में जलाने वाली आग होगी और जिसको वो आग समझेंगे वो असल में मीठा और पाकीज़ा पानी होगा फिर जो कोई तुममें से उसे पाये तो उसे चाहिये कि जो आग माअ़लूम हो उसमें गिर पड़े।
(मुस्लिम–सही–6/447-ह०–7370)
(अबू दाऊद–सुनन–5/305-ह०–4315)

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दज्जाल बाँयी आँख से काना होगा उसके सर पर बहुत ज़्यादा बाल होंगे और उसके साथ एक जन्नत और एक दोज़ख़ होगी लेकिन उसकी जन्नत (असल में) दोज़ख़ होगी और उसकी दोज़ख़ (असल में) जन्नत होगी।
(इब्ने माजा–सुनन–3/424-ह०–4071)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें दज्जाल के मुताअ़ल्लिक़ ऐसी ख़बर न दूँ जो किसी नबी ने आज तक अपनी क़ौम को न बताई हो फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक वो काना है और वो अपने साथ जन्नत व दोज़ख़ की शबीय भी लायेगा दर हक़ीक़त जिसे वो जन्नत कहेगा वो आग होगी और जिसको वो जहन्नुम कहेगा वो दरअसल जन्नत होगी नीज़ फ़रमाया कि मैं तुम्हें उससे ख़बरदार करता हूँ जिस तरह नूह (अ़लैहिस्सलाम) ने अपनी क़ौम को उससे डराया था।
(बुख़ारी–सही–3/514-ह०–3338)
(मुस्लिम–सही–6/448-ह०–7372)

दज्जाल मदीने के क़रीब एक शख़्स को मारेगा फिर उसे ज़िन्दा करेगा

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दज्जाल पर मदीना में घुसना हराम होगा और वो मदीने की पथरीली ज़मीन के क़रीब आयेगा तो उसके पास एक शख़्स जायेगा जो लोगों में बेहतर होगा वो कहेगा मैं गवाही देता हूँ कि तू दज्जाल है जिसका ज़िक्र हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने किया था फिर दज्जाल लोगों से कहेगा अगर मैं इसको मार डालूँ और फिर ज़िन्दा कर दूँ तो क्या फिर भी तुम मेरे मुआ़मले में शक करोगे वो कहेंगे नहीं तो वो उसे क़त्ल करेगा फिर उसे ज़िन्दा करेगा फिर वो ज़िन्दा हुआ शख़्स कहेगा क़सम खुदा की मुझे पहले इतना यक़ीन न था जितना कि अब है कि तू यक़ीनन दज्जाल है फिर दज्जाल उसको दोबारा क़त्ल करना चाहेगा लेकिन क़त्ल न कर सकेगा।
(मुस्लिम–सही–6/453-ह०–7375)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दज्जाल निकलेगा तो मोमिनीन में से एक शख़्स से दज्जाल

के गिरोह के कुछ लोग मिलेंगे वो उससे कहेंगे कि कहाँ का इरादा है तो वो कहेगा कि मैं उसकी तरफ़ का इरादा रखता हूँ जिसका ख़ुरूज हुआ है तो वो उससे कहेंगे तो क्या तुम हमारे मालिक (दज्जाल) पर ईमान नहीं लाये हो तो वो कहेगा कि हमारा मालिक छुपा हुआ नहीं है फिर दज्जाल के लोग कहेंगे कि इसे मार डालो फिर वो आपस में गुफ़्तगू करेंगे और कहेंगे कि हमारे मालिक (दज्जाल) ने तो किसी को मारने से मनाअ़ किया है जब तक कि उसके सामने न ले जायें फिर उस शख़्स को दज्जाल के पास ले जायेंगे फिर जब वो शख़्स दज्जाल को देखेगा तो कहेगा ऐ लोगों ये तो दज्जाल है जिसकी ख़बर हमें हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने दी थी

फिर दज्जाल अपने लोगों को हुक्म देगा कि इसका सर फोड़ा जाये और उस मोमिन शख़्स के पेट और पीठ पर भी मार पड़ेगी फिर दज्जाल उससे पूछेगा कि तू मेरे ऊपर यक़ीन नहीं करता (यानी मेरी खुदाई पर) तो वो कहेगा कि तू झूठा मसीह है फिर दज्जाल हुक्म देगा कि इसको चीर दो फिर वो शख़्स सर से पाँव तक आरे से चीरा जायेगा यहाँ तक कि उसके दो टुकड़े हो जायेंगे फिर दज्जाल उन दोनों टुकड़ों के बीच में जायेगा और कहेगा उठ खड़ा हो तो वो शख़्स (ज़िन्दा होकर) सीधा उठ खड़ा हो जायेगा फिर दज्जाल उस शख़्स से पूछेगा कि अब तू मेरे

ऊपर ईमान लाया है तो वो शख़्स कहेगा कि मुझे तो और ज़्यादा यक़ीन हो गया कि तू दज्जाल है फिर दज्जाल लोगों से कहेगा लोगों अब मैं किसी और के साथ ये काम नहीं कर सकता यानी अब किसी को ज़िन्दा नहीं कर सकता फिर दज्जाल उस शख़्स को ज़िब्हा करने के लिये पकड़ेगा लेकिन वो गले से लेकर हसली तक ताँबे का बन जायेगा और वो उस शख़्स को दोबारा ज़िब्हा न कर सकेगा फिर दज्जाल उस शख़्स को पकड़कर आग में फेंक देगा और लोग समझेंगे कि उसे आग में फेंक दिया गया है हालाँकि वो जन्नत में डाला जायेगा आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो शख़्स अल्लाह के यहाँ सब लोगों से ज़्यादा शहीद है।
(मुस्लिम–सही–6/453-ह०–7377)

दज्जाल के साथ सत्तर हज़ार यहूदी होंगें

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सत्तर हज़ार यहूदी दज्जाल के पैरोकार हो जायेंगे जो सियाह रंग की चादरें ओढ़े होंगे।
(मुस्लिम–सही–6/463-ह०–7392)

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दज्जाल मशरिक़ के एक इलाक़े से निकलेगा जिसका नाम खुरासान है उसके साथ ऐसे लोग होंगे जिनके चेहरे गोया तै बा तै ढालें हों (यानी चेहरे चपटे व पुर गोस्त होंगे) (तिर्मिज़ी–सुनन–2/118-ह०–2237) (इब्ने माजा–सुनन–3/424-ह०–4072)

–: दज्जाल मदीने में दाख़िल न होगा :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया दज्जाल मशरिक़ की जानिब से आयेगा यहाँ तक कि वो उहद पहाड़ के पीछे उतरेगा और उसका इरादा मदीने में दाख़िल होने का होगा मगर फ़रिश्ते उसका मुँह वहीं से शाम की तरफ़ फेर देंगे और वहीं वो तबाह हो जायेगा। (मुस्लिम–सही–3/386-ह०–3351)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मदीना तय्यबा के दरवाज़ों पर फ़रिश्ते पहरा देंगे यहाँ न तो ताऊन दाख़िल होगा और न दज्जाल आयेगा।
(बुख़ारी–सही–2/385-ह०–1880)
(मुस्लिम–सही–3/386-ह०–3350)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब दज्जाल मदीने के क़रीब आयेगा तो फ़रिश्तों को पायेगा कि वो मदीने की हिफ़ाज़त कर रहे होंगे पस दज्जाल मदीने में दाख़िल न हो सकेगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/125-ह०–2242)
(बुख़ारी–सही–6/410-ह०–7125)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर शहर में दज्जाल का गुज़र होगा मगर मक्का मुकर्रमा और मदीना तय्यबा में नहीं आयेगा क्योंकि इनके तमाम रास्तों पर फ़रिश्ते सफ़ बस्ता पहरा देंगे फिर मदीना तय्यबा अपने मकीनो को तीन बार खूब ज़ोर से हिलायेगा यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ाला हर काफ़िर व मुनाफ़िक़ को मदीने से निकाल देगा और मदीने में सिर्फ़ मोमिनीन बाक़ी रह जायेंगे।
(बुख़ारी–सही–2/385-ह०–1881)
(मुस्लिम–सही–6/463-ह०–7390)

–: तीस झूठे दज्जाल पैदा होंगे :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत क़ायम–

न होगी यहाँ तक कि तीस के क़रीब झूठे दज्जाल पैदा होंगे और उनमें से हर एक ये कहेगा कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ।
(मुस्लिम–सही–6/437-ह०–7342)
(अबू दाऊद–सुनन–5/317-ह०–4333)

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक कि मेरी उम्मत के कुछ क़बाइल मुशरिकों के साथ न मिल जाये और कुछ क़बीले बुतों की इ़बादत न करने लगें और अ़न–क़रीब मेरी उम्मत में कज़्ज़ाब व झूठे लोग ज़ाहिर होंगे उनकी ताअ़दाद तीस होगी और उन में से हर एक का दाअ़वा होगा कि वो नबी हैं हालाँकि मैं आख़िरी नबी हूँ और मेरे बाद कोई नबी नहीं और मेरी उम्मत का एक गिरोह हक़ पर रहेगा और उनका कोई मुख़ालिफ़ उनका कुछ न बिगाड़ सकेगा यहाँ तक कि अल्लाह का फ़ैसला आ जाये और मुझे अपनी उम्मत पर गुमराह इमामों का ख़ौफ़ है। (अबू दाऊद–सुनन–5/265-ह०–4252)

–: नुजूल ए ईसा (अ़लैहिस्सलाम) और क़त्ले दज्जाल व याजूज माजूज :–

➡ हज़रत नव्वास बिन समअ़ान किलाबी (रज़ि–अल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर–

(सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दज्जाल काना है और अल्लाह के नज़दीक ज़लील भी है और उसका फ़ित्ना बड़ा सख़्त होगा और वो आदात के ख़िलाफ़ बातें दिखायेगा नीज़ फ़रमाया उसके बाल घुँघराले और आँखें उभरी हुई होंगी और तुममें से जो दज्जाल को पाये तो सूरह कह्फ़ की शुरु की आयतें उस पर पढ़े (इन आयतों के पढ़ने से वो दज्जाल के फ़ित्ने से महफ़ूज़ रहेगा) और दज्जाल शाम और ईराक़ के दरमियान से निकलेगा और फ़साद फैलाता फिरेगा दाँयीं तरफ़ और बाँयीं तरफ़ पहले वो कहेगा कि मैं नबी हूँ फिर वो दोबारा कहेगा कि मैं तुम्हारा रब हूँ और वो काना होगा और उसकी आँखों के दरमियान काफ़िर लिखा होगा।

नीज़ फ़रमाया कि ऐ अल्लाह के बन्दो ईमान पर मज़बूत रहना फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया कि वो कितने दिनों तक ज़मीन पर रहेगा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि चालीस दिन तक जिनमें एक दिन एक साल का होगा और एक दिन एक महीने का होगा और एक दिन एक हफ़्ते का होगा और बाक़ी दिन तुम्हारे दिनों की तरह होंगे आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया कि वो ज़मीन में किस क़दर जल्द चलेगा (जब कि थोड़ी मुद्दत में दुनियाँ घूम आयेगा) तो आप-

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फरमाया कि उसकी चाल अब्र (बादल) की मान्निद होगी कि हवा उसके पीछे रहेगी और वो एक क़ौम की तरफ़ आयेगा और उनको अपनी तरफ़ बुलायेगा वो उसको मान लेंगे और उस पर ईमान ले आयेंगे फिर वो आसमान को हुक्म देगा तो उन पर पानी बरसेगा और वो ज़मीन को हुक्म देगा वो अनाज उगाऐगी और उनके जानवर (चराऐ से लौटकर) खूब मोटे ताज़े होकर शाम को आयेंगे और उनके थन खूब दूध से भरे हुये होंगे।

फिर वो एक गँवार देहाती से कहेगा कि देख अगर मैं तेरे माँ बाप को ज़िन्दा कर दूँ तब तू मुझे अपना रब कहेगा फिर दो शैतान दज्जाल के हुक्म से उसके माँ बाप की सूरत बनकर आयेंगे और कहेंगे बेटा इसकी इताअ़त कर ये तेरा रब है और उसका फ़ित्ना ये होगा कि दज्जाल एक शख़्स पर ग़ालिब होकर उसके दो टुकडे कर देगा बल्कि आरी से चीरकर उसके दो टुकड़े कर देगा फिर वो कहेगा कि देखो मैं अपने इस बन्दे को जिलाता हूँ फिर दज्जाल कहेगा कि क्या अब भी तेरा कोई और रब है सिवाये मेरे फिर अल्लाह तआ़ला उस शख़्स को ज़िन्दा कर देगा फिर दज्जाल उससे कहेगा कि तेरा रब कौन है तो वो कहेगा कि मेरा रब अल्लाह है और तू अल्लाह का दुश्मन दज्जाल है फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम)–

ने फ़रमाया कि उस मर्द का दर्जा जन्नत में मेरी उम्मत में सबसे बुलन्द होगा नीज़ फ़रमाया कि दज्जाल हर जगह जायेगा सिवाये मक्का व मदीना के फिर एक क़ौम के पास जायेगा उनको अपनी तरफ़ बुलायेगा तो वो उसकी बात न मानेंगे उसके खुदा होने का रद्द कर देंगे आख़िर कार दज्जाल उनके पास से लौट जायेगा फिर दज्जाल का एक खण्डर पर से गुज़र होगा और वो उससे कहेगा कि अपने ख़ज़ाने निकाल तो उस खण्डर के सब ख़ज़ाने उसके साथ हो लेंगे।

फिर अल्लाह तआला ईसा बिन मरयम (अ़लैहिस्सलाम) को भेजेगा और वो सफ़ेद मीनार पर दमिश्क़ के मशरिक़ की जानिब दो ज़र्द कपड़े पहने हुये उतरेंगे उनके दोंनों हाथ दो फ़रिश्तों के बाजू पर रखे हुये होंगे फिर जब वो अपना सर झुकायेंगे तो उसमें से पसीना टपकेगा और जब सर को ऊँचा करेंगे तो मोतियों की तरह पसीने के क़तरे टपकेंगे।

फिर ईसा (अ़लैहिस्सलाम) चलेंगे और दज्जाल को बाबे लुद्द पर पायेंगे (वो एक पहाड़ है शाम में बाअ़ज़ो ने कहा कि बैतुल मुक़द्दस का एक गाँव है) वहाँ दज्जाल मरदूद को क़त्ल करेंगे दज्जाल फिर ईसा (अ़लैहिस्सलाम) को देखकर ऐसा पिघल जायेगा जैसे नमक पानी में पिघल जाता) फिर हज़रत फिर ईसा अ़लैहिस्सलाम

उन लोगों के पास आयेंगे जिनको अल्लाह तआ़ाला ने दज्जाल के शर से महफ़ूज़ रखा और उनके मुँह पर हाथ फेरेंगे और उनको जन्नत में जो दर्जे मिलेंगे वो उनका बयान करेंगे फिर अल्लाह तआला हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) पर वही भेजेगा कि ऐ ईसा मेरे (मोमिन) बन्दों को तूर पहाड़ पर ले जाओ।

इरशादे बारी तआ़ाला है–
उसकी तरफ़ से (उनके लिये बहुत) दरजात हैं और बख़्शिश और रहमत है और अल्लाह तआ़ाला बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।
(सू०–निसा–4/96)

फिर अल्लाह तआ़ाला याजूज व माजूज को भेजेगा

जैसा कि इरशादे बारी तआला है–
यहाँ तक कि जब याजूज और माजूज खोल दिये जायेंगे और वो हर बुलन्दी से दौड़ते हुये उतर आयेंगे।
(सू०–अम्बिया–21/96)

यानी हर एक टीले पर से चढ़ दौड़ेंगे तो उनका पहला गिरोह जो कसरत में टिड्डियों की मिस्ल होगा और उनका पहला हिस्सा यानी उनका आगे का हिस्सा एक तालाब पर गुज़रेगा और उसका सारा पानी पी जायेगा फिर उनका आख़िरी हिस्सा

आयेगा तो कहेगा कि किसी ज़माने में इस तालाब में पानी था।

फिर हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) और आपके असहाब अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ़ करेंगे तो अल्लाह तआ़ला याजूज माजूज के लोगों पर उनकी गर्दनों में चन्द कीड़े भेजेगा जो उनकी गर्दनों में घुस जायेंगे वो दूसरे दिन सुबह को सब के सब मरे हुये होंगे जैसे आदमी मरता है फिर हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) और आपके साथी पहाड़ से उतरेंगे और एक बालिश्त बराबर भी जगह न पायेंगे जो उनकी चिकनाई, व बदबू और खून से खाली हो आख़िर फिर वो अल्लाह की बारगाह में दुआ़ करेंगे पस अल्लाह तआ़ला कुछ परिन्दे भेजेगा जिनकी गर्दनें ऊँटों की गर्दनों के बराबर होंगी यानी ऊँटो के बराबर परिन्दे आयेंगे वो उनकी लाशें उठाकर ले जायेंगे और जहाँ अल्लाह तआ़ला को मन्जूर होगा वहाँ डाल देंगे।

फिर अल्लाह तआ़ला पानी बरसायेगा ये पानी उन सब को धो डालेगा यहाँ तक कि ज़मीन आइने की तरह साफ़ हो जायेगी फिर ज़मीन से कहा जायेगा कि अब अपने फल उगा और अपनी बरकत फेर ला उस दिन कई आदमी मिलकर एक अनार खायेंगे और वो सब सेर हो जायेंगे और अनार के छिलके से (छतरी की तरह) साया करेंगे

यानी अनार बहुत बड़े-बड़े होंगे और अल्लाह तआ़ला दूध में बरकत देगा यहाँ तक कि एक दूध वाली ऊँटनी लोगों की कई जमाअ़तों पर काफ़ी हो जायेगी और दूध वाली एक गाय एक क़बीले के लोगों के लिये काफ़ी होगी और एक दूध वाली बकरी एक छोटे क़बीले के लोगों के लिये काफ़ी हो जायेगी।

ईसा (अ़लैहिस्सलाम) मेरी उम्मत में एक आ़दिल हाकिम और मुन्सिफ़ इमाम होंगे और वो सबील को जो नसारा लटकाये रहते है उसे तोड़ डालेंगे और सुअरों को मार डालेंगे और उसका खाना बन्द करा देंगे और जिज़या मौकूफ़ कर देंगे (बल्कि काफ़िरों से कहेंगे) या मुसलमान हो जाओ या क़त्ल होना कुबूल करो और बाअ़ज़ो ने कहा कि जिज़या लेना इस वजह से बन्द कर देंगे कि कोई फ़क़ीर न होगा सब मालदार होंगे और बाअ़ज़ो ने कहा कि जिज़या सब काफ़िरों पर मुक़र्रर कर देंगे यानी लड़ाई मौकूफ़ हो जायेगी और काफ़िर जिज़या पर राज़ी हो जायेंगे और सद्क़ा (ज़कात) मौकूफ़ कर देंगे तो न बकरियों पर न ऊँटों पर कोई ज़कात लेने वाला मुक़र्रर होगा और आपस में लोगों के कीने और बुग्ज़ उठ जायेंगे और हर एक ज़हरीले जानवर का ज़हर जाता रहेगा यहाँ तक कि बच्चा अपना हाथ साँप के मुँह में दे देगा मगर वो कुछ भी नुकसान न पहुँचायेगा और एक छोटी बच्ची शेर को भगा-

देगी वो उसको ज़रर न पहुँचायेगा और शेर भेड़ या बकरियों में इस तरह रहेगा जैसे कुत्ता जो इन (भेड़ बकरी) में रहता और ज़मीन सुलह से भर जायेगी जैसे बरतन पानी से भरता है और सब लोगों का कलमा एक हो जायेगा सिवाये खुदा के किसी की परस्तिश न होगी (सो सब कलमा ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ेंगे) और लड़ाई दुनियाँ से उठ जायेगी।

लोग इस हाल में होंगे कि अल्लाह तआ़ला एक पाकीज़ा हवा भेजेगा वो उनकी बग़लों के तले से असर करेगी और हर एक मोमिन की रुह क़ब्ज़ करेगी और बाक़ी लोग गधों की तरह या ऐलानियाँ जिमाअ़ करते रह जायेंगे उन लोगों पर क़यामत वाक़ैअ़ होगी।
(इब्ने माजा–सुनन–3/326-ह०–4075–4077)
(मुस्लिम–सही–6/448-ह०–7373)
(अबू दाऊद–सुनन–5/308-ह०–4321)

क़यामत के क़रीब जब दज्जाल का ज़हूर होगा तो हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) का दमिश्क़ में नुजूल होगा वो दज्जाल को क़त्ल करेंगे और इस्लाम व शरीअ़ते मुहम्मदी को कामिल तौर पर नाफ़िज़ करेंगे और चालीस बरस तक ये फ़रीज़ा अन्जाम देंगे।

इरशादे बारी तआ़ला है :-

और बेशक वो (ई़सा अ़लैहिस्सलाम जब आसमान से नुजूल करेंगे तो क़रीबे) क़यामत की अ़लामत होंगे पस तुम हरगिज़ इसमें शक न करना और मेरी पैरवी करते रहना ये सीधा रास्ता है।
(सू०-जुख़रुफ़-43/61)

ई़सा (अ़लैहिस्सलाम) आसमान पर ज़िन्दा हैं अल्लाह तआ़ला ने उन्हें यहूदियों के मक्रो फ़रेब व उनके हमले से महफ़ूज़ फ़रमां कर आसमान पर ज़िन्दा उठा लिया था

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :-

उन्होंने न उन्हें क़त्ल किया और न सूली पर चढ़ाया मगर (हुआ ये कि) उनके लिये (किसी को ई़सा अ़लैहिस्सलाम का) हम शक्ल बना दिया गया बेशक जो लोग उनके बारे में इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं वो यक़ीनन उस (क़त्ल के हवाले) से शक में पड़े हुये है उन्हें (हक़ीक़ते हाल का) कुछ इ़ल्म नहीं मगर ये कि गुमान की पैरवी कर रहे हैं और उन्होंने ई़सा (अ़लैहिस्सलाम) को यक़ीनन क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अपनी तरफ़ (आसमान पर) उठा लिया।
(सू०-निसा-4/57,58)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

और (क़रीबे क़यामत नुजूले ई़सा अ़लैहिस्सलाम के

वक़्त) अहले किताब में से कोई (फर्द या फ़िरक़ा) ऐसा न रहेगा मगर वो ईसा (अ़लैहिस्सलाम) की मौत से पहले ज़रुर उन पर ईमान ले आयेगा और क़यामत के दिन ईसा (अ़लैहिस्सलाम) उन सब पर गवाह होंगें। (सू०–निसा–159)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
फिर (यहूदी) काफ़िरों ने (ईसा अ़लैहिस्सलाम के क़त्ल के लिये) खूफ़िया साजिश की और अल्लाह तआ़ला ने (ईसा अ़लैहिस्सलाम को बचाने के लिये) मख़्फ़ी तदबीर फ़रमाई और अल्लाह तआ़ला सबसे बेहतर तदबीर फ़रमाने वाला है।
(सू०–आले इमरान–3/55)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि ताजदारे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ईसा (अ़लैहिस्सलाम) उतरने वाले हैं कि जब तुम उन्हें देखोगे तो पहचान जाओगे वो दरमियानी क़ामत वाले हैं और उनका रंग सुर्ख़ व सफ़ेद होगा हल्के ज़र्द रंग के लिबास में होंगे वो लोगों से इस्लाम के लिये क़िताल करेंगे सलीब तोड़ेंगे और खिंजीर को क़त्ल करेंगे और जिज़या मौकूफ़ कर देंगे इस्लामी हुकूमत में ग़ैर मुस्लिमों से टैक्स लेने को जिज़या कहते हैं और अल्लाह तआ़ला उस ज़माने में इस्लाम के अलावा दीगर सब दीनों को ख़त्म कर देगा और वो दज्जाल को हलाक करेंगे और–

ईसा (अ़लैहिस्सलाम) ज़मीन पर चालीस साल तक रहेंगे फिर उनकी वफ़ात होगी और मुसलमान उनका जनाज़ा पढ़ेंगे।
(अबू दाऊद–सुनन–5/309-ह०–4329)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि परवर दिगार की क़सम कि जिसके हाथ में मेरी जान है कि तुम्हारे दरमियान हाकिमे आ़दिल ईसा बिन मरयम (अ़लैहिस्सलाम) उतरेंगे और वो सलीब को तोडेंगें यानी लकड़ी की सलीब जिसके सामने ईसाई पूजा करते हैं और सुअ़रों को मांरेंगे और जिज़या को मौक़ूफ़ कर देंगे और कसरत से लोगों को माल देंगे यहाँ तक कि कोई कुबूल न करेगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/115-ह०–2233)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अ़नक़रीब तुम लोगों में हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) नुजूल फ़रमायेंगे और शरीयते मुहम्मदिया के मुताबिक़ हुक्म देंगे और अ़द्लो इन्साफ़ करेंगे और सलीब (सूली) तोड़ डालेंगे व खिंजीर को क़त्ल कर देंगे और जिज़या को मौक़ूफ़ करेंगे और माल बहुत देंगे और कोई माल कुबूल करने वाला नहीं रहेगा
(मुस्लिम–सही–1/253-ह०–389)

:– याजूज माजूज का बयान :–

इरशादे बारी तआ़ाला है :–

ऐ हबीब मुअज़्ज़म ये आपसे जुलक़रनैन के बारे में सवाल करते हैं फ़रमां दीजिये मैं अभी तुम्हें उनके हाल का तज़किरा पढ़कर सुनाता हूँ बेशक़ हमने ज़माना क़दीम में उसे ज़मीन पर इक़्तिदार बख़्शा था और हमने उसकी सल्तनत को तमाम वसाइल व असवाव से नवाज़ा था फिर वो एक और रास्ते पर चल पड़ा यहाँ तक कि वो गुरुबे आफ़ताब की सिम्त आबादी के आख़िरी किनारे पर जा पहुँचा उसने सूरज के गुरुब के मंजर को ऐसे महसूस किया जैसे वो कीचड़ की तरह सियाह रंग पानी के गरम चश्मे में डूब रहा हो और उसने वहाँ एक क़ौम को आबाद पाया हमने फ़रमाया ऐ जुलक़रनैन ये तुम्हारी मर्ज़ी पर मुनहसिर है ख़्वाह तुम उन्हें सज़ा दो या उनके साथ अच्छा सुलूक करो जुलक़रनैन ने कहा जो शख़्स (कुफ़्र व फ़िस्क़ की सूरत में) जुल्म करेगा तो हम उसे ज़रुर सज़ा देंगे फिर वो अपने रब की तरफ़ लौटाया जायेगा फिर वो उसे बहुत ही सख़्त अ़ज़ाब देगा और जो शख़्स ईमान ले आयेगा और नेक अ़मल करेगा तो उसके लिये बेहतर जज़ा है और हम भी उसके लिये अपने अहकाम में आसान बात कहेंगे फिर वो (दूसरे) रास्ते पर चल पड़ा यहाँ तक कि वो तुलूअ़–ए–

आफ़ताब (की सिम्त आबादी) के आख़िरी किनारे पर जा पहुँचा वहाँ उसने सूरज (के तुलूअ़ के मंज़र) को महसूस किया (जैसे) सूरज (ज़मीन के उस ख़ित्ते पर आबाद) एक क़ौम पर उभर रहा हो जिसके लिये हमने सूरज से बचाव की ख़ातिर कोई हिजाब तक नहीं बनाया था वाक़िअ़ा इसी तरह है और जो कुछ उसके पास था हमने अपने इ़ल्म से उसका इहाता कर लिया फिर वो एक और रास्ते पर चल पढ़ा यहाँ तक कि वो (एक मक़ाम पर) दो पहाड़ों के दरमियान जा पहुँचा जहाँ उसने उन पहाड़ों के पीछे एक ऐसी क़ौम को आबाद पाया जो किसी की बात समझ नहीं सकते थे उन्होंने कहा ऐ जुलक़रनैन बेशक याजूज और माजूज ने ज़मीन में फ़साद बपा कर रखा है तो क्या हम आप के लिये इस शर्त पर कुछ माल मुक़र्रर कर दें कि आप हमारे व उनके दरमियान एक बुलन्द दीवार बना दे जुलक़रनैन ने कहा मुझे मेरे रब ने इस बारे में जो इख़्तियार दिया है वो बेहतर है तुम अपने ज़ोरे बाज़ू (यानी मेहनत व मशक़्क़त) से मेरी मदद करो और मैं तुम्हारे और उनके दरमियान एक मज़बूत दीवार बना दूँगा तुम मुझे लोहे के बड़े बड़े टुकड़े ला दो यहाँ तक कि जब उसने वो लोहे की दीवार पहाड़ की दोंनों चोटियों के दरमियान बराबर कर दी तो कहने लगा (कि अब आग लगाकर इसे) धोंकों यहाँ तक कि जब उसने लोहे को धोंक–धोंक कर आग बना डाला तो कहने लगा मेरे पास लाओ अब मैं इस–

पर पिघलता हुआ ताँबा डालूँगा फिर उन याजूज व माजूज में इतनी ताक़त न थी कि उस पर चढ़ सकें और न इतनी कुदरत पा सके कि उसमें सूराख़ कर दें जुलक़रनैन ने कहा ये मेरे रब की जानिब से रहमत है फिर जब मेरे रब का वाअ़दा –ए–क़यामत क़रीब आयेगा तो वो इस दीवार को गिराकर हमवार कर देगा (और दीवार रेज़ा रेज़ा हो जायेगी) और मेरे रब का वाअ़दा बरहक़ है और हम उस वक़्त (जुमला मख़्लूक़ात या याजूज और माजूज को) आज़ाद कर देंगे वो (तेज़ मौजों की तरह) एक दूसरे में घुस जायेंगे और सूर फूँका जायेगा तो हम उन सब को मैदाने हश्र में ज़माअ़ कर लेंगे।
(सू०–कह्फ़–18/83 ता 99)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–
यहाँ तक कि जब याजूज और माजूज खोल दिये जायेंगे और वो हर बुलन्दी से दौड़ते हुये उतर पड़ेंगे और (क़यामत का) सच्चा वाअ़दा पूरा होने का वक़्त क़रीब आ जायेगा तो अचानक काफ़िर लोगों की आँखें फटी की फटी रह जायेंगी (और वो कहेंगे कि) हाय हमारी कमबख़्ती कि हम इस (दिन की आमद) से ग़फ़लत में पड़े रहे बल्कि हम ज़ालिम थे बेशक तुम और वो (बुत) जिनकी तुम अल्लाह के सिवा पूजा करते थे (सब) दोज़ख़ का ईधन हैं (और) तुम उसमें दाख़िल होने वाले हो। (सू०–अम्बिया–21/96 ता 98)

➡ हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) घबराये हुये उनके पास आये और फ़रमाया कि अल्लाह के सिवा कोई माअ़बूद बरहक़ नहीं अ़रब की तबाही उस आफ़त की वजह से होने वाली है जो बिल्कुल क़रीब आ लगी है आज याजूज माजूज की दीवार में इतना छेद हो गया है कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने अँगूठे और शहादत की उँगली से सूराख़ बनाकर उसकी मिक़दार बताई हज़रत ज़ैनब (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या हम ऐसी हालत में तबाह व हलाक हो जायेंगे जब हममें नेक लोग मौजूद होंगे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया हाँ जब बुराई बदकारी ज़्यादा फैल जायेगी यानी फ़िस्को फुजूर ज़्यादा हो जायेगा। (मुस्लिम–सही–6/407-ह०–7235) (बुख़ारी–सही–3/526-ह०–3346 व 6/381-ह०–7059)

➡ हज़रत नवास बिन समआ़न (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़रीब है कि मुसलमान याजूज माजूज की कमानों और ढ़ालों को सात बरस तक जलायेंगे। (इब्ने माजा–सुनन–3/330-ह०–4076)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/119-ह०–2240)

–: मेंहदी अ़लैहिस्सलाम का बयान :–

➡ हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया मेंहदी (अ़लैहिस्सलाम) हम अहले बैत में से होंगे और अल्लाह तआ़ला उनको एक ही शब में (ख़िलाफ़त की) सलाहियत वाला बना देगा।
(इब्ने माजा–सुनन–3/340-ह०–4085)
(अबू दाऊद–सुनन–5/286-ह०–4283)

➡ हज़रत सईद बिन मुसय्यब फ़रमाते हैं कि हम हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के पास थे हमारे दरमियान हज़रत मेंहदी (अ़लैहिस्सलाम) का ज़िक्र हुआ तो फ़रमाने लगीं कि मैंने रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) से सुना है कि मेंहदी (अ़लैहिस्सलाम) सय्यदा फ़ातिमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) की औलाद में से होंगे।
(इब्ने माजा–सुनन–3/340-ह०–4086)
(अबू दाऊद–सुनन–5/286-ह०–4284)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेंहदी (अ़लैहिस्सलाम) मुझसे (यानी मेरी नस्ल से) होंगे उसकी पेशानी फ़राख़ और नाक बुलन्द होगी वो–

ज़मीन को अ़द्ल व इन्साफ़ से भर देंगे जैसे कि जुल्म व ज़्यादती से भरी होगी और वो सात साल तक हुकूमत करेंगे।
(अबू दाऊद–सुनन–5/287-ह०–4285)

➡ हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने अपने साहब ज़ादे हज़रत हसन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की तरफ़ देखा और फ़रमाया मेरा ये फ़रज़न्द सय्यद (व सरदार) है जैसा कि इसके मुताअ़ल्लिक़ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इसकी नस्ल में से एक शख़्स होगा जो तुम्हारे नबी (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का हम नाम होगा और वो अख़लाक़ में भी हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के मुशाबा होगा और वो ज़मीन को अ़द्ल व इन्साफ़ से भर देगा।
(अबू दाऊद–सुनन–5/290-ह०–4090)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के आख़िर में एक ख़लीफ़ा होगा जो बग़ैर शुमार किये लोगों को लप भर भर के माल तक़सीम करेगा (और वो खलीफ़ा मेंहदी (अ़लैहिस्सलाम) होंगे।)
(मुस्लिम–सही–6/432-ह०–7315)

★ ★ ★ ★ ★